हरीश अरोड़ा कृत 'एक समर्पित एकांत' में संवेदना

पूजा कौशिक,
शोधार्थी, हिंदी विभाग
चंद्र मोहन झा विश्वविद्यालय, शिलांग

संसार में कोई भी जागरूक और संवेदनशील कवि मानव भविष्य के विषय में चिंतित हुए बिना नहीं रह सकता। इसी अर्थ में हरीश अरोड़ा ने अपने काव्य संकलन एक समर्पित एकांत में 52 कविताओं के माध्यम से सामाजिक अव्यवस्था, अवसरवादिता, अमानवीयता, संवेदनशीलता और नारी शोषण, राजनीति के उथल–पुथल राष्ट्र के प्रति चिंतक–दृष्टि, वर्ग वैषम्यता की पीड़ा, अस्तित्व की खोज, शहरी जीवन की भाग दौड़ में आदमी की पहचान एवं स्वयं आदमी का भीड़ में अकेलापन महसूस करना, ग्रामीण परिवेश की सौम्यता प्रेम के मधुर भाव तथा अध्यात्म दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी दृष्टि दी है। शायद ही कोई पक्ष ऐसा हो जो हरीश अरोड़ा द्वारा रचित काव्य संग्रह एक समर्पित एकांत में संवेदना की दृष्टि से अछूता रहा हो।

संवेदना के कई अर्थ निकलते हैं। सनसनी पैदा होना, उत्तेजना निर्माण होना, संवेदना निर्माण होना, मन की कई भावनाओं का निर्माण होना, संवेदन, महसूस करना, दृष्टिगत होना, सहानुभूति करना आदि अर्थों में संवेदना को प्रकट किया जा सकता है। "मन में होनेवाला बोध या अनुभव, अनूभूति; किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला दुख, सहानुभूति"[1] का अर्थ ही संवेदना है, लेकिन इसमें केवल दुःख को ही क्यों जोड़े इसके अलावा सुख तथा अन्य अनुभूतियों का अनुभव करना भी आ जाता है। अंग्रेजी में इसके लिए Sympathy, Fellow Filling या Sensation शब्द का इस्तेमाल होता है। अलग–अलग परिस्थितियों में इसमें से उचित शब्द का इस्तेमाल होता है। काव्य संवेदना के लिए अगर अंग्रेजी में सीधे पर्याय ढूंढ़ना शुरू करेंगे तो Poetry sensation कहा जा सकता है। खैर कवि का सामाजिक भान और उसका अपने आस–पास के माहौल से जुड़ाव तथा एकाकार होना उसकी संवेदना को प्रकट करता है। सहज भाषा में अगर व्यक्त करें तो कहा जा सकता है कि जिसका ह्रदय पत्थर दिल है वह संवेदनाओं का वहन नहीं कर सकता और जिसका ह्रदय पिघल सकता है या पसीज सकता है वह संवेदनाओं से भरा होता है। दुनिया की छोटी–छोटी घटनाएं ऐसे व्यक्ति के मन पर प्रभाव डालती है और वह वाचा (वाणी), भाव, विचार, लिखावट बन प्रकट होती है। कवि या साहित्यकार बस इसी शक्ति के आधार पर लेखनी के माध्यम से मन की संवेदनाओं को प्रकट करता है। कवि का अनुभव जगत् जितना बड़ा उतना अभिव्यक्ति वैविध्य रहता है। अर्थात् रचनाकार की परिस्थितियां उसके लेखन का मूल स्रोत होती है और वहीं साहित्य में उतरती है।

हरीश अरोड़ा की कविताओं से उनका जो व्यक्तित्व है उसमें प्रखर इमानदारी पाते हैं। कहीं कोई लाग लपेट नहीं देखी जा सकती। खरे शब्दों में खरी बात कहने की शक्ति एवं क्षमताएं दोनों ही कवि में स्पष्ट लक्षित होती हैं। उनकी कविताओं में कभी भी ऐसा नहीं लगता कि कभी उधर की अनुभूति या उधार की वेदना से प्रेरित होकर कविता लिख रहा है। जो कुछ भी है स्वयं अनुभूत किया गया है। हरीश अरोड़ा अपने व्यक्तिगत अनुभवों की प्रमाणिकता से इस काव्य संग्रह द्वारा अपनी काव्य संवेदना को प्रखर रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम रहे हैं। किंतु उनके

अनुभवों की अभिव्यक्ति एकांतग्रस्त न होकर ,इतनी अधिक व्यापक और वृहद आयामी है कि वह सब के अनुभव क्षेत्र का विषय बन जाती है।

कला को जीवन हेतु मानने वाले कवि सदैव समाज का सर्वांगीण विकास ही अपना परम लक्ष्य मानते हैं। यह सत्य है कि यद्यपि कवि निरंकुश एवं स्वतंत्र चिंतन करते हैं तथापि अपनी संवेदनशीलता के कारण वे युगीन सम विषम परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना भी नहीं रहते । मानव जीवन के विभिन्न गतिविधियों समस्याओं मान्यताओं से प्रभावित होकर वे समाज के वर्तमान यथार्थ का चित्रण करते रहते हैं।

कोई भी सजग कलाकार कवि साहित्यकार जीवन की वास्तविकताओं से निरपेक्ष नहीं रह सकता ।कवि जहां एक ओर समाज से प्रेरणा ग्रहण करता है वहीं दूसरी ओर उसे प्रेरणा प्रदान भी करता है। इस तरह कवि या साहित्यकार का समाज से अन्योन्याश्रित संबंध रहता है। हरीश अरोड़ा इस बात की पुष्टि अपनी कृति 'एक समर्पित एकांत' में संकलित ''पदचिह्न'' में करते दिखाई देते हैं:–

"ए दोस्त
मैं और तुम
हम दोनों ही
आतुर हैं
अपनी अपनी
स्मृतियों के पदचिह्न मिटाने को ।
किंतु
पीड़ा के तप्त कणों पर
शब्दों की रेतीली जमीन से
क्या मिट पाएंगे
मेरी कविता की संवेदना
और
तुम्हारे यथार्थ के
गहराए हुए पदचिह्न.....
ए दोस्त!"[2]

निःसंदेह हरीश अरोड़ा एकदम सामाजिक सरोकार से जुड़े लक्ष्योंन्मुख कवि हैं। भारतीय समाज`की सभ्यता और संस्कृति का जो आदर्श रूप देखने को मिलता है ,उसे कहीं पीछे छोड़ आधुनिकता की होड़ में आज व्यक्ति किस धरातल पर खड़ा है। यह स्थिति हरीश अरोड़ा के कवि मन को कचोटती है और कवि के मन में प्रश्न चिन्ह अंकित कर देती है :–

"सचमुच
नगर सभ्य है
पर लोग.....?"[3]

अपनी कविताओं में समाज के सभी वर्गों की गतिविधियों, भावनाओं तथा आकांक्षाओं का विशेष रूप से विश्लेषण किया है। हरीश अरोड़ा की सभी कविताएं एक निश्चित दिशा की ओर अग्रसर होती हैं। व्यक्ति को स्वस्थ, नवीन विश्व एवं समाज की ओर अग्रसर करना ही उनकी कविताओं का मुख्य उद्देश्य जान पड़ता है। अत्यंत लघु कविता 'प्रश्न' के माध्यम से जनसामान्य के मानस पटल पर एक प्रश्न चिह्न अंकित कर जिस गहराई से सोचने पर हरीश अरोड़ा पाठक को मजबूर करते हैं वह सराहनीय है। उनकी लघु कविता को पढ़कर भी पाठक यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि सभ्य कहे जाने वाले समाज में सभ्यता आखिर कहां है? अपनी कविता 'प्रश्न' के माध्यम से कवि ने महानगरीय सभ्यता पर करारा व्यंग्य और कटाक्ष किया है उन्होंने दर्शाया है कि यह सभ्यता दिन प्रतिदिन बहुत अधिक पथरीली होती जा रही है।

इतना ही नहीं अपनी कविता **"तप्त है फिर से जवानी"** के माध्यम से वे शहरी सभ्यता और लोगों की स्वार्थ संबंधों में ही सिमट कर रह

गई मानसिकता को भी दर्शाने से पीछे नहीं रहे हैं। वे कहते हैं कि इस सभ्यता में सभी अनजान है। सभी अनजान हैं अपने आसपास के परिवेश से। यही कारण है कि कविता के माध्यम से कवि उन अनजान लोगों को अपने ही शहर से परिचित कराने की एक कोशिश करता हैः–

"वह

अपने शहर की दास्तां

खाली पन्नों में लपेट

बेचता है

अपने ही शहर में।"[4]

इस प्रकार की व्यक्तिवादी संस्कृति में व्यक्ति अपने संबंधों को एक सीमित चारदीवारी में ही बंद रखता है। उसे इस बात का आभास तक नहीं होता कि उसके आसपास के परिवेश में आखिर क्या घटित हो रहा है। वह केवल और केवल स्वार्थ हित में ही लिप्त रहता है ।शहरी जीवन की विडंबना तथा तीव्रता के परिवर्तित होते मूल्यों से कभी मन इतना अधिक आहत है कि वह किसी भी जन्म में, कभी भी शहर में नहीं रहना चाहता ।कवि के अनुसार यह वह स्थान है जहां मृत्यु जैसे शाश्वत सत्य के प्रति भी कोई सहानुभूति का भाव नहीं रखता। शायद व्यक्ति अनजान रह जाता है अपने ही परिवेश से।

मेरे पड़ोसी को

मेरे मरने के तेरह दिन बाद

भोज के समय पता चला

कि मैं मर गया हूं ।

हे राम !

अगला जन्म

मुझे शहर में मत देना।[5]

आज के शहरी जीवन पर कितना करारा प्रहार करती हैं। हरीश अरोड़ा की संवेदना को सहजता से ही इन पंक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता हैं। दिन प्रतिदिन परिवर्तित होते सामाजिक संबंधों के ढांचे को, अपनी कविताओं के माध्यम से हरीश अरोड़ा आधुनिक युग की सबसे बड़ी विडंबना कहते हैं। अपनी कविता 'दंगा' के माध्यम से वे दर्शाते हैं कि किस प्रकार व्यक्ति आपसी संबंधों को केवल तभी अधिक महत्व देता है जब उसे लाभान्वित होने का अवसर मिले। अन्यथा अपने सगे संबंधियों से मुंह मोड़ लेने में वह जरा भी नहीं झिझकता। आज का व्यक्ति इतना अधिक अवसरवादी हो चुका है कि वह इसके लिए किसी की मौत का भी लाभ उठाने से नहीं कतराते। मानव की मानव के प्रति भाव लुप्तता हरीश अरोड़ा को 'दंगा' कविता लिखने को प्रेरित करती है–

"जिस दिन

उसने अखबार में पढ़ा

कि दंगे में मरने वाले के

नजदीकी रिश्तेदार को

सरकार

सहायतार्थ एक लाख रुपए देगी

उस रात

अचानक

उस गरीब और लाचार

बेरोजगार का

बूढ़ा बाप मर गया।"[6]

जहां एक ओर इस कविता के माध्यम से कभी भाव लुप्तता की बात कर रहा है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक अर्थव्यवस्था में फैली ऐसा मान्यता पर भी करारा व्यंग्य किया गया है और उनके आगे संबंध खोखले होकर रह गए हैं। इस संबंध विहीन समाज का मुख्य कारण गरीबी, बेरोजगारी और लाचारी भी है। गरीबी के कारण मानवीयता मनुष्य का साथ छोड़ चुकी है। यह लाचारी उसे

अपने जन्म दाता की हत्या करने पर भी विवश कर देती हैं या फिर दंगों में मारे गए किसी अनजान वृद्ध को अपना पिता कहने पर विवश कर देती है। हरीश अरोड़ा ने साधारण शब्दों के माध्यम से वर्तमान परिवेश और उसमें जी रहे व्यक्ति की जिंदगी और जिंदगी से जुड़े सवालों संघर्षों के साथ चेहरा वहीं समाज में संबंध विहीन पति के जीवन जी रहे व्यक्ति के जीवन का साक्षात्कार करवाया है और यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि व्यक्ति इतना नीच हो गया है कि पिता जो पालन–पोषण ,भरण पोषण करता है, धन की चमक और हानि के आगे व्यक्ति एक दिन उसकी हत्या करने से भी पीछे नहीं हटता।एक मानवीय संवेदना की हत्या में संबंध कहीं स्थान प्राप्त नहीं कर पा रहा है। इस कविता के माध्यम से हरीश अरोड़ा जी अपनी चिंतक दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। संघर्षशील स्रष्टा तंत्र में आई अव्यवस्था को बदलने के लिए तत्पर रहता है। इस बात से भी अनजान नहीं कि यदि कोई तंत्र के विरुद्ध आवाज उठेगी तो उसे दबाने के लिए उसकी हत्या भी की जा सकती है। तंत्र में फैली अराजकता के विरुद्ध एक दिशा नायक के रूप में कवि हरीश अरोड़ा उभर कर आए हैं। कसम कविता में कवि ने तंत्र में फैली अराजकता के विरुद्ध एक समाधान दृष्टि प्रस्तुत की हैः–

"अब वक्त आ गया है
मेरी टेंटुएं के दबने का
मैंने कल रात ही
समाज के साथ चलने की
कसम खाई है।"[7]

यदि संवेदनाओं की बात की जाए तो हरीश अरोड़ा मानव मन की गहराई में इतनी भीतर तक उतर जाते हैं कि सामाजिक वातावरण में चारों ओर फैली इस अराजकता में भय आक्रांत माँ का भय भी उन से छिपा नहीं रह पाता है। वे आसपास के परिवेश से चिंतित मां के भय को अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं जो बताती है कि किस प्रकार जीवन की अनिश्चितता का यहां वहां हर किसी को भय आक्रांत कर रहा है। कब क्या घट जाए पता नहीं। जीवन असुरक्षित सा है। सामाजिक परिवेश में प्रतिपल, प्रतिक्षण अराजकता या घटना चक्र बढ़ता ही चला जा रहा है। ऐसे में एक मां जिसके घर के सभी सदस्य घर से बाहर हैं, तब वह एक अनिश्चित भय से अनजान ,हर पल घबराई रहती है कि पता नहीं कब कौन इस घटना चक्र का हिस्सा बन जाए। एक मां के भय को भीतर तक अनुभूत कर गहन अभिव्यक्ति की है।

"मेरी मां.....
पड़ोस में जब भी कोई
छोटा–मोटा झगड़ा ही क्यों ना हो
पर सबसे पहले
घर के सभी लोगों की
गिनती करते हैं ।"[8]

अपनी कविता के माध्यम से हरीश अरोड़ा शब्द को ब्रह्म का प्रतीक बताते हैं। जिस प्रकार ब्रह्म संसार की रचना करते हैं, उन्हें जीवन मूल्यों से इंगित करता है। उसी तरह कवि के शब्द सामाजिक सत्य को उजागर करने का कर्म करते हैं। आज के भौतिकवादी संस्कृति में कवि द्वारा कराई गई वास्तविकता का बोध कानो में गूंजता है। हरीश अरोड़ा का मन विपरीत परिस्थितियों में घबरा कर भी टूटता नहीं है। उनमें एक दृढ़ संकल्प की आस्था सदैव विद्यमान रहती है :–

"अखबारी कागज की तरह
थोड़ी देर बोलते हैं
मेरे शब्द
और फिर
डाल दिए जाते हैं

रद्दी की टोकरी में

लिखने के लिए।"[9]

प्रस्तुत शब्दों में यदि गहराई ढूंढी जाए तो यह स्पष्ट होता है कि कवि को यह ज्ञात है कि वह इस समाज में परिवर्तन लाने के चाहे जितने भी प्रयास कर ले किंतु वास्तविकता यही है कि उसके शब्दों को कुछ देर के लिए पढ़ कर लोग या तो भूल जाते हैं या उन से लाभ उठाने का प्रयास करते हैं। किंतु उन को गहराई से समझने और अपने जीवन में अपनाने का कोई प्रयास नहीं करते हैं।

'धूप का आमंत्रण' कविता में भी इसी प्रकार के आशावादी दृष्टिकोण को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। कवि धूप के इस आमंत्रण से जनमानस को भी भीतर तक गरमाने ने प्रयास कर रहे हैं। शहर में सभ्यता, तनाव ,संवेदनहीनता में वृद्धि हो रही है। मानवीय संवेदनाएं मर रही है। शहरों में नरक कुंड का सा परिवेश है। ऐसे में केवल जीवित हैं तो केवल कविताएं क्योंकि उनमें संवेदना है ।संवेदनशील हरीश अरोड़ा का मन प्रतिपल समाज में जो सूनेपन की स्थिति है, खालीपन है, उसको भरने के लिए नव जीवन मूल्यों की खोज में लगा रहता है। वे शांति और प्रेम भाव से समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम क्रांति का पक्ष लेते हैं। उनके वर्ग संघर्षों में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। प्रगतिशील चेतना के पक्षधर कभी आज की परिस्थितियों में खुद को परिवर्तित कर समाज के साथ चलने के लिए भी प्रेरित कर रहे हैं कि सामाजिक न्याय की मांग तो बिना वर्ग संघर्ष की पूरी हो नहीं सकती।

आज के परिवेश में जब तक व्यक्ति अपने अधिकार के लिए सजग नहीं होता तब तक हर व्यक्ति उसे दबाएगा ही। यह निश्चित है। इस मान्यता के साथ क्रांति होने पर भी यदि शोषित वर्ग अपने अधिकार के लिए प्रयत्नशील नहीं होगा तो शोषक उसे दबाएगा ही। ऐसा कवि का मानना है। विपरीत परिस्थितियों से पलायन ना कर उसे अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना होगा। शहरी जीवन की इसी प्रकार की इतनी विसंगतियों के पश्चात भी हरीश जी का कवि मन ना तो उनसे समझौता करना चाहता है और ना ही उनसे दूर भागना चाहता है । हरीश अरोड़ा इन परिस्थितियों में रहते हुए भी इस प्रकार धूप के आमंत्रण को स्वीकार कर रहे हैं ।उस निमंत्रण को जनमानस को स्वीकार करवाने के लिए प्रेरित भी कर रहे हैं क्योंकि शहर में अभी शायद कहीं संवेदना जीवित है। ऐसा उनका विश्वास है कि जीने की संभावना अभी बाकी है:–

शहरीले एहसास के दरवाजों के पेंच

ढीले पड़ सकते हैं कभी भी...

मैं नई कीलों की तलाश में हूं ।

उठो, शहरीले आदमी.....

खिड़की से

घर के अंदर आती धूप

आमंत्रण दे रही है

शहर में अब भी जीने की संभावना है।"[10]

हरीश अरोड़ा की कर्म ही कर्म के प्रति दृष्टि इस कविता में पूर्ण रूप से उभर कर आई हैं। अपने कभी कर्म के प्रति सजग कवि की काव्य चेतना एक स्वतंत्र अस्तित्व रखने वाले समाज पर केंद्रित है जिसमें समाज की कुरूपताओं, रूढ़ियों, अवसरवादिता और खोखली परंपराओं को मान्यता न देते हुए समाज स्तर पर एक स्वस्थ सामाजिक दर्शन की खोज और उसके अनुरूप जीवन निर्माण की चेष्टा है।

हरीश अरोड़ा मानवीय वेदना से द्रवित ऐसे मानवतावादी कवि हैं जो मानवीय संबंधों की टूटन ,मानव के सुख–दुख , यांत्रिकता, मानवीय मूल्यों का विघटन, संस्कारों के लोप , खोखली होती मान्यता को अपने काव्य में केवल व्यक्त ही

नहीं करते अपितु मानव की मुक्ति का मार्ग भी खोजते दिखाई पड़ते हैं। यह कभी के संवेदना का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मानक हिंदी विशाल शब्दकोश, पृ. 668
2. हरीश अरोड़ा, एक समर्पित एकांत , 'पदचिह्न', पृष्ठ
3. हरीश अरोड़ा, एक समर्पित एकांत, 'प्रश्न' पृष्ठ संख्या 47
4. हरीश अरोड़ा, एक समर्पित एकांत , 'अजनबी कविता' पृष्ठ 27
5. हरीश अरोड़ा, एक समर्पित एकांत , 'विडंबना' पृष्ठ 66
6. हरीश अरोड़ा, एक समर्पित एकांत , 'दंगा' पृष्ठ 29
7. हरीश अरोड़ा, एक समर्पित एकांत , 'कसम' पृष्ठ 17
8. हरीश अरोड़ा, एक समर्पित एकांत , 'अनिश्चित भय' पृष्ठ 26
9. हरीश अरोड़ा, एक समर्पित एकांत , 'शब्द' पृष्ठ 48
10. हरीश अरोड़ा, एक समर्पित एकांत, 'धूप का आमत्रण' पृष्ठ 32–33

Copyright © 2018, Pooja Kaushik. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.